Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2017: 5.068, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, JUNE-JULY, 2019, VOL- 7/34

सोनी टीवी के थ्रिलर धारावाहिक 'बेहद' का समाज पर प्रभाव

धरवेश कठेरिया[1], पीयूष प्रताप सिंह[2], प्रमोद पाण्डेय[3], नीरज कुमार सिंह[4] & पदमा वर्मा[5]

[1] सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[2] सहायक प्रोफेसर, सूचना तथा भाषा अभियांत्रिकी केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[3] सहायक प्राध्यापक, संचार एवं शोध विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्यप्रदेश।

[4] एम. फिल. शोधार्थी, सामाजिक वहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केंद्र (2016-17), काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश।

[5] एम. फिल. शोधार्थी, जनसंचार विभाग (2016-17), महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

Abstract

धारावाहिक समाज का आईना होता है ऐसे में सवाल उठता है कि बेहद धारावाहिक समाज को कौन सा आईना दिखा रहा है? वह इतनी नकारात्मकता को क्यों परोस रहा है? धारावाहिक का प्रस्तुतीकरण वर्तमान में प्रसारित अन्य धारावाहिकों से हटकर है। धारावाहिक प्रस्तुतीकरण, कथानक, दृश्यांकन, लोकेशन और वस्त्र सज्जा आदि स्तरों पर दर्शक को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण रूप में सफल हो रहा है। कथानक के रूप में प्रयोग किए जा रहे डायलॉग आम जीवन की पृष्ठिभूमि और कहावतों को प्रस्तुत करते हैं जिन्हें दर्शकों द्वारा पसंद किया जा रहा है। सबसे बड़ी विशेषता इस धारावाहिक के कहानी की है। जिसमें गरीबी-अमीरी और प्यार के त्रिकोणीय प्रस्तुति में एक-दूसरे को हासिल करने की पृष्ठभूमि पर फिल्मांकन किया गया है। इस प्रस्तुतीकरण को एक विशेष दर्शक समूह द्वारा बेहद पसंद किया जा रहा है। एक विशेष समूह की पसंद क्या समाज के उन परिवर्तनों की ओर संकेत करती है जिनका प्रभाव समाज पर देखने को मिल रहा है। यह प्रभाव है जिसे हम समाज और संस्कृति पर विदेशी संस्कृति का हमला कह सकते हैं या सामाजिक परिवर्तन।

शब्द कुंजी: *अभियान, बेहद, थ्रिलर, खतरनाक, संस्कृति, सोनी टीवी।*

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

उपकल्पनाः

- 'बेहद' धारावाहिक का समाज पर नकारात्मक प्रभाव रहा है।
- सामाजिक परिवर्तन में धारावाहिकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।
- 'बेहद' धारावाहिक भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया है।

उद्देश्यः

अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए कुछ उद्धेश्य तय किए गए हैं जो इस प्रकार है-

- 'बेहद' धारावाहिक के माध्यम से हो रहे बदलावों का अध्ययन करना।
- 'बेहद' धारावाहिक की लोकप्रियता और उसके प्रभावों का अवलोकन करना।
- सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन में धारावाहिकों की भूमिका का अध्ययन करना।

शोध सीमाएं:

प्रस्तुत शोध कार्य 'सोनी टीवी के थ्रिलर धारावाहिक 'बेहद' का समाज पर प्रभाव' को जानने के लिए नागपुर के शहरी क्षेत्र में रहने वाले 18 वर्ष से अधिक महिला एवं पुरुष 200 प्रतिभागियों से आंकड़ों को प्रश्नावली/अनुसूची के माध्यम से एकत्र कर उनका विश्लेषण किया गया है।

शोध महत्वः

यह धारावाहिक, धारावाहिकों के प्रस्तुतिकरण के नए मानकों को स्थापित करने में सफल प्रतीत होता है। इस धारावाहिक से दर्शकों को धारावाहिकों का बेहतर प्रस्तुतीकरण देखने को मिला। 'बेहद' धारावाहिक जहां युवाओं के बीच लोकप्रियता हासिल करने में सफल रहा वहीं इस धारावाहिक नें प्रसारण के क्षेत्र में कई कीर्तिमान भी स्थापित किए। इस धारावाहिक सें धारावाहिकों के निर्माण के क्षेत्र में हुए महत्वपूर्ण बदलावों का अध्ययन किया जा सकता है।

शोध प्रविधिः

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'सोनी टीवी के थ्रिलर धारावाहिक 'बेहद' का समाज पर प्रभाव' में शोध को ध्यान रखते हुए निम्न पद्धति/उपकरण का उपयोग किया गया है-

निदर्शन पद्धतिः

शोध अध्ययन को मूर्त रूप देने के लिए उद्देश्यपरक निदर्शन के अंतर्गत नागपुर शहर का चयन किया गया। नागपुर शहर के शहरी क्षेत्रों में रह रहे निवासियों का चयन निदर्शन के माध्यम से किया गया है।

शोध उपकरणः

प्रश्नावलीः

अध्ययन को स्वरूप देने के लिए नागपुर के शहरी क्षेत्रों में रह रहे लोगों से प्रश्नावली के माध्यम से 'बेहद' धारावाहिक के बारे में उत्तरदाता के राय और विचारों को जानने का प्रयास किया गया है। आंकड़े संकलन के लिए खुली और बंद प्रश्नावाली का उपयोग किया गया है। प्रश्नावली के अंतिम प्रश्न के रूप में खुला प्रश्न रखा गया है जिसके माध्यम से उत्तरदाताओं के विचारों को भी शोध में शामिल किया गया है।

अनुसूचीः

शैक्षणिक एवं भाषाई आधार को देखते हुए प्रश्नावली भरने में हो रही परेशानी के कारण उत्तरदाताओं से उनके राय और विचार जानने के लिए प्रश्नावली का उपयोग यहां अनुसूची के रूप में भी किया गया है। जिससे अशिक्षित उत्तरदाताओं के राय/विचार को भी शोध हेतु शामिल किया गया है।

प्रस्तावना:

भारतीय मनुष्य सामाजिक ताने-बाने के बीच पला बढ़ा प्राणी है। यह भावनाओं और रिश्तों को जीवन में सबसे ज्यादा महत्व देता है ये बात भारत में आज भी हम बेबाकी से कह सकते हैं। यही कारण है कि आज भारत विश्व के अन्य देशों के लिए एक मिसाल है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

चलचित्र और धारावाहिक सदा से इन्हीं तानों-बानों और सामाजिक मान्यताओं की डोर को मजबूत करते आए हैं।

भारत में धारावाहिकों की शुरुआत 'हम लोग' धारावाहिक से दूरदर्शन चैनल पर 7 जुलाई, 1984 से होती है। हमलोग (1984) भारतीय टीवी का पहला सोप ऑपेरा था। 156 एपिसोड का यह धारावाहिक लम्बे समय तक प्रसारित होने वाला धारावाहिक रहा। इस धारावाहिक की कहानी 80 के दशक में भारतीय मध्यवर्ग की रोजमर्रा के संघर्ष पर आधारित थी। इसी समय बुनियाद (1986) यह धारावाहिक 1947 में भारत-पाकिस्तान के बंटवारे और उसके बाद की कहानी पर आधारित है। यह भारतीय टीवी में एक ऐसा क्लासिक धारावाहिक रहा है जिसका जादू आज भी बरकरार है। इसकी लोकप्रियता के कारण डीडी मेट्रो पर साल 2000 में इसका फिर से प्रसारण किया गया जबकि साल 2013 में इसका प्रसारण सहारा वन चैनल पर भी किया गया।

रामायण (1987) भगवान राम के जीवन और आदर्शों पर आधारित इस धार्मिक धारावाहिक को आज भी देश के सबसे लोकप्रिय धारावाहिक के रूप में जानते हैं। इस धारावाहिक का प्रसारण जनवरी, 1987 में प्रारंभ हुआ था। इस धारावाहिक की कथा वाल्मीकि और तुलसी रचित रामचरित मानस आदि से प्रेरित थी। इस धारावाहिक की लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि जिस वक्त यह धारावाहिक टीवी पर प्रसारित होता था उस वक्त भारत में सड़के सूनी हो जाती थी। लोग घरों में अपने टीवी सेटों से चिपके रहते थे और कहा जाता है कि भारत में टीवी के प्रसार/विकास में भी इस धार्मिक धारावाहिक का काफी अहम स्थान है। यह एक ऐसा धारावाहिक भी था जिसके पोस्टर को लोगों ने अपने घरों में भगवान की तरह पूजा था। इसी कड़ी में महाभारत (1988) लोकप्रियता के मामले में रामायण के बाद महाभारत दूसरा ऐसा धार्मिक धारावाहिक था जिसने भारत में एक बड़ा टीवी दर्शक वर्ग तैयार किया। यह धारावाहिक वेदव्यास रचित महाभारत के महाकाव्य पर आधारित था। इसका प्रसारण 1988 से 1990 के बीच हुआ। भारत एक खोज (1988) धारावाहिक 53 एपिसोड में

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

दिखाया गया। यह देश का एक ऐतिहासिक धारावाहिक रहा। यह धारावाहिक जवाहरलाल नेहरू की प्रसिद्द किताब डिस्कवरी ऑफ इंडिया पर आधारित था। नीम का पेड़ (1991) राही मासूम राजा की कहानी पर आधारित इस धारावाहिक का प्रसारण दूरदर्शन पर 1991 में किया गया था। आजाद भारत के गांवों की बदलती सामाजिक-राजनीतिक चेतना पर आधारित इस धारावाहिक का निर्देशन गुरबीर सिंह ग्रेवाल ने किया था। इस धारावाहिक में पंकज कपूर ने एक बंधुआ मजदूर बुधई राम की शानदार भूमिका निभाई थी। यह धारावाहिक एक बंधुआ मजदूर और उसके बेटे के विधायक बनने की दास्तान है। पारिवारिक समस्याओं पर आधारित 'खानदान' ने भी दर्शकों के बीच महत्वपूर्ण जगह बनाई।

1990 के बाद दूरदर्शन ने दोपहर की सेवा महिलाओं को दर्शक मानकर धारावाहिकों का प्रसारण शुरू किया जिसमें स्वाभिमान, शांति, जुनून जैसे अनेक धारावाहिक लोकप्रिय हुए अन्य धारावाहिकों में अपराजिता, औरत, इतिहास, वक्त की रफ्तार, कविता, कभी सौतन कभी सहेली, जन्नत, साहिल, मेरा हमसफर, उड़ान प्रमुख रुप से शामिल हैं। इसी दौर में दूरदर्शन धीरे-धीरे विकास से बाजार की ओर बढ़ने लगा। सन् 2000 का समय धारावाहिकों के इतिहास में महत्वपूर्ण रहा। क्योंकि इसी समय केवल टेलीविजन पर कई ऐसे धारावाहिकों का प्रसारण शुरू हुआ, जिन्होंने टेलीविजन पर मनोरंजन की विद्या को बदलना आरंभ कर दिया। स्टार प्लस पर जुलाई, 2000 में कौन बनेगा करोड़पति, क्योंकि सास भी कभी बहू थी का प्रसारण शुरू हुआ। महिला पात्रों को मुख्य भूमिका में दर्शकों द्वारा काफी पसंद किया गया। फलस्वरुप दर्शकों की मांग के अनुसार धारावाहिकों में महिला पात्रों को मुख्य पात्र की भूमिका दी जाने लगी। केसर, कुटुंब, कुसुम, कहीं तो होगा, जस्सी जैसी कोई नहीं, कहानी घर-घर की, आदि धारावाहिकों में थोड़ा नयापन आया क्योंकि यह अन्य धारावाहिकों से थोड़े अलग थे। ये मेरी लाइफ है, करीना-करीना, अस्तित्व एक प्रेम कहानी, मिली, किटी पार्टी, वो रहनेवाली महलों की, करिश्मा आदि। सन 2006 में उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

एवं बिहार के परंपरागत पृष्ठभूमि पर आधारित अनेक धारावाहिकों का प्रसारण आरंभ हुआ। मायका, घर की लक्ष्मी, सात फेरे, करम अपना-अपना, घर एक सपना, एक चाबी पड़ोस में, कुलवधू, बालिका वधू, थोड़ी खुशी-थोड़ा गम आदि धारावाहिकों को इस श्रेणी में रखा जा सकता है।

आज अधिकतर धारावाहिकों में महिलाओं की नकारात्मक भूमिका को ही प्रमुखता से दर्शाया जा रहा है। इससे भारतीय समाज में नारी के त्याग, तपस्या, सहनशीलता, समर्पण, आदि की सदियों पुरानी अवधारणा समाप्त हो रही है। सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं की जो सशक्त छवि दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी और सृजनकर्ता के रूप में बनी है, नई पीढ़ी इससे अलग शिक्षा ले रही है ऐसे रुप अब समाज में कम ही देखने को मिलते हैं। लेकिन आज समाज में कुछ ऐसे धारावाहिकों का चलन दिखाई पड़ रहा है जो इन सबसे आगे निकालने की होड़ में उलूल-जुलूल हरकतें दिखाने पर अमादा हैं। जिसके समाज पर पड़ने वाले बुरे परिणामों की उनको जरा भी फिक्र नहीं है।

समय के साथ धारावाहिकों में भी बदलावा देखने को मिले लेकिन ये बदलाव भारतीय समाज और संस्कृति का संवर्धन करने की अपेक्षा उन्हें प्रभावित करते हुए एक नई संस्कृति को स्थापित करने लगे। एक ऐसी संस्कृति जो हमारी संस्कृति के मानकों को प्रभावित कर एक नई संस्कृति को गढ़ने लगे। धारावाहिकों के माध्यम से गढ़ी जा रही संस्कृति समाज के कुछ चुनिंदा समूहों ने ही अपनाई और उनके व्यवहार में देखने को मिलती है। जबकि संचार माध्यम इसे बड़ी सफलता मानते हुए ऐसे ही अनके कार्यक्रमों का निमार्ण करने की होड़ में लग गए। अनके ऐसे धारावाहिकों का निर्माण आरंभ हुआ जो भारतीय समाज और सभ्यता को प्रभावित करने लगे।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

इसी श्रेणी में 11 अक्तूबर, 2016 से रात 9 बजे सोनी टीवी पर 'बेहद' नाम से धारावाहिक प्रसारित हो रहा है। धारावाहिक में नायक और दो नायिकाओं के उससे प्यार को आधार बनाया गया है। धारावाहिक मध्यम परिवार से शुरू होकर उच्च वर्ग तक जाने की ललक लिए नायक को दिखाता है जिसका फायदा नायक की बॉस उठाती है। नायक की बॉस यानि माया को अपने पैसों और रुतबे का बहुत घमंड है। वह पैसों के नशे में चूर होकर हर काम को बहुत ही टशन में करती हुई दिखाई पड़ती है। वह कर्मचारियों की जरा सी गलती पर उन्हें नौकरी से निकाल देती है और हमेशा अपनी छवि को नकारात्मक बनाए रखती है। उसे धारावाहिक के नायक अर्जुन से प्यार हो जाता है। जिसके बाद वह अपने प्यार को पाने के लिए सामाजिक मान्यतों और सामाजिक नियम कानूनों को ताक पर रख देती है। जो इस धारावाहिक की सबसे बड़ी खामी है। धारावाहिक दर्शकों को किसी भी कार्य को करने के नकारात्मक संदेश को प्रसारित करता है जिससे दर्शकों के अंतर्मन पा इसका गहरा असर पड़ता है। माया को बार-बार किसी भी कार्य को नकारात्मक रूप से करने और उस कार्य में हमेशा सफल होते दिखाना समाज और युवा पीढ़ी के लिए हितकर नहीं है। प्यार को धारावाहिक में मानसिक गुलामी के रूप में दिखाया गया है। अनेक ऐसे घटनाओं को समेटे हुए धारावाहिक समाज में नकारात्मकता फैलाने का कार्य कर रहा है जो कि भारतीय समाज और संस्कृति के मानक बिंदुओं पर भी प्रहार है।

प्रभाव:

धारावाहिक 'बेहद' में हर तरफ नकारात्मकता को ही दिखाया गया है और इसमें इस बात का थोड़ा भी ध्यान नहीं रखा गया है कि इसके दर्शक पश्चिमी सभ्यता वाले नहीं

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बल्कि भारतीय सभ्यता में रचा बसा दर्शक वर्ग है। जो टीवी पर रामायण आते देख उस पर तिलक करता है। यह दर्शक टीवी पर दिखने वाली चीजों को अपनी असली जिंदगी से जोड़ कर देखता है। ऐसे में टीवी पर नकारात्मकता का लबादा ओढ़े बेहद धारावाहिक समाज को क्षति पहुंचा रहा है। भारतीय नारी आम तौर पर शराब का सेवन तो दूर उसके नाम से भी चिढ़ती है। धारावाहिक में माया की माँ को हमेशा शराब पीते दिखाना, पिता जो बच्चों के लिए संबल है उसे अपने ही बच्चे के लिए नकारात्मक दिखाना, प्यार न स्वीकार ने पर हॉट एयर बैलून को क्रैश करने की धमकी देना, नायक के जन्मदिन के लिए केक लेकर जल्दी पहुंचने की होड़ में लोगों के प्राणों की रक्षा और आपातकाल की पहचान, एंबुलेंस से केक पहुंचाना आदि। नकारात्मक बातों से भरपूर यह धारावाहिक भारतीय समाज को कहां ले जाना चाहता है? इसकी मंशा समाज को सही संदेश देकर नवयुवकों के भविष्य वर्धन से है या नकारात्मक संदेश देकर उनके मन मस्तिष्क को भ्रमित करने से है। मनोरंजन के नाम पर यह धारावाहिक समाज में केवल नकारात्मकता को बढ़ावा दे रहा है ऐसे में जनमाध्यमों के सामाजिक दायित्वों का निर्वहन कैसे संभव है? या केवल व्यावसायिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु समाज और संकस्कृति के मानकों से खिलवाड़ करना कहां तक उचित है।

तथ्य विश्लेषण एवं आंकड़ों का प्रस्तुतिकरणः

प्रस्तुत शोध 'सोनी टीवी के थ्रिलर धारावाहिक 'बेहद' का समाज पर प्रभाव' के अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि नागपुर में बेहद धारावाहिक को देखने वालों पर इसका क्या प्रभाव रहा है? इस प्रभाव को जांचने के लिए तथ्यों और आंकड़ों को प्रश्नावली/अनुसूची के माध्यम से एकत्र कर उनका विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध नागपुर के शहरी क्षेत्र में रहने वाले प्रतिभागियों पर विशेष रूप से केंद्रित है। अध्ययन में 18 वर्ष से अधिक आयु के महिला एवं पुरुष प्रतिभागियों का चयन किया गया है जिनसे विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई है। तथ्य संकलन हेतु चार सौ से

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अधिक प्रश्नावली/अनुसूची को भरवाया गया है लेकिन तथ्य विश्लेषण में 200 प्रतिभागियों के मतों को ही शामिल किया गया है।

प्रश्नावली में कुल 11 प्रश्नों को शामिल किया गया है। प्रश्नावली में बहुविकल्पीय प्रश्नों के माध्यम से प्राप्त तथ्यों को अध्ययन हेतु केंद्र में रखा गया है। प्रश्नावली में विकल्प के रूप में हां, नहीं और थोड़ा-बहुत आदि को तथ्य संकलन हेतु आधार बनाया गया है। प्रश्नावली में अंतिम प्रश्न को खुला रखा गया है। जिसमें प्रतिभागियों से विषय से संबंधित विचार एवं सुझाव लिए गए है। प्रस्तुत शोध में प्रश्नावली के कुल 10 प्रश्नों में से कुछ उपयोगी प्रश्नों/तथ्यों का चित्रमय प्रस्तुतीकरण किया गया है। जो इस प्रकार है-

प्रश्न.1. आपको बेहद सीरियल कैसा लगता है? उक्त प्रश्न के संदर्भ में केवल 4 प्रतिशत प्रतिभागी इसके प्रस्तुतीकरण को खराब मानते हैं। जबकि 40 एवं 39 प्रतिशत प्रतिभागी इसे बहुत अच्छा और अच्छा मानते हैं। जबकि सामान्य में केवल 15 प्रतिशत अपना मत देते हैं। प्राप्त मतों के आधार पर हम कह सकते हैं कि दर्शकों का एक बड़ा समूह बेहद धारावाहिक को बेहद पसंद कर रहा है।

प्रश्न.2. बेहद सीरियल समाज में किस तरह की संस्कृति को बढ़ावा दे रहा है? 57 प्रतिशत प्राप्त आंकड़े एक बड़े दर्शक समूह को बेहद के पक्ष में खड़ा करते नजर आते है। वे बेहद के प्रस्तुतिकरण को समाज के लिए सकारात्मक और प्रभावी मानते हैं। जबकि वहीं 43 प्रतिशत दर्शक इसे समाज में नकारात्मक संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार मानते हैं। बेहद धारावाहिक कि पृष्ट भूमि हमारे समाज की एक ऐसे विषय की पृष्टभूमि को प्रस्तुत करती है जिसमें प्यार, पैसा और प्रतिशोध जैसी कहानी को लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। प्यार, पैसा और प्रतिशोध जैसे विषय आज भी हमारे समाज में लोगों के लिए रोचकता का विषय बना हुआ है। समाज की इस कमजोर कड़ी का बेहद जैसे धारावाहिक और उनके प्रस्तोता अपने व्यावसायिक हितों के लिए इसका दोहन करने से नहीं चूकते हैं। चाहे फिर बात समाज और संस्कृति पर प्रभाव की ही क्यों न हो।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रश्न.3. क्या बेहद सीरियल भारतीय समाज एवं संस्कृति की मान्यताओं को प्रभावित कर रहा है? उक्त प्रश्न के संदर्भ में 61 प्रतिशत प्रतिभागी यह मानते हैं कि बेहद धारावाहिक के प्रसारण से भारतीय समाज एवं संस्कृति की मान्यताएं प्रभावित हो रही है। बेहद धारावाहिक बहुत कम समय में ही लोकप्रियता के शिखर पर पहुंच गया है। इसके पीछे धारावाहिक की कहानी और उसका प्रस्तुतीकरण है। धारावाहिक के प्रस्तुतीकरण में जहां एक तरफ नई तकनीक का सहारा लिया जा रहा है वहीं दूसरी तरफ इस धारावाहिक की कहानी का प्रस्तुतीकरण सामाजिक ताने-वाने की उन कमजोरियों को प्रमुखता के साथ दिखाना और उन पर प्रहार करना है। जो हमारे समाज में आम समस्या है। इस धारावाहिक में समाज की उन बुराईयों को प्रमुखता के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है। जो प्रत्येक समाज और संस्कृति में पाए जाते हैं। लेकिन इस धारावाहिक में इन बुराईयों का प्रस्तुतीकरण इतना भयानक और भयावह रूप में किया जा रहा है जिससे प्रतीत होता है कि हमारे समाज और संस्कृति में केवल बुराईयां ही स्थान रखती हैं। इस धारावाहिक की तेजी से बढ़ती टीआरपी समाज विददानें के लिए जरूर चिंता का विषय है।

प्रश्न.4. क्या बेहद सीरियल युवाओं में नकारात्मकता को बढ़ावा दे रहा है/देगा? 51 प्रतिशत प्राप्त हां के अंतर्गत आंकड़े यह दर्शाते हैं कि समाज में अभी भी युवा धारावाहिकों के प्रस्तुतीकरण को गंभीरता से लेते हुए उसपे विचार मंथन कर अपनी राय बनाते हैं। बेहद धारावाहिक एक ऐसा थ्रिलर है जो धारावाहिकों की श्रेणी में तकनीकी और प्रस्तुतीकरण के रिकॉर्ड तोड़ रहा है। ऐसे में भी प्राप्त आंकड़ों का प्रतिशत लगभग समान प्राप्त होना हमारे समाज और संस्कृति की मजबूत कड़ी को दर्शाता है।

प्रश्न.5. आप बेहद सीरियल के किस पात्र के प्यार करने के तरीके से प्रभावित हैं बेहद सीरियल में मुख्य पात्र के रूप में सांझ और माया को दिखाया गया है। पुरुष पात्र के रूप में मुख्य भूमिका अर्जून के द्वारा निभाई जा रही है। सांझ और माया दोनों अर्जून से बेहद प्यार करती है। इनका प्यार करने का अपना-अपना तरीका है। प्रतिभागियों द्वारा

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सांझ का सादगी से प्यार करने के तरीके को 61 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा पसंद किया गया वहीं 39 प्रतिशत प्रतिभागी माया के प्यार करने के तरीके को पसंद कर रहे हैं। तथ्य यह दर्शाते हैं कि सादगी से किया जाने वाला प्यार जहां एक तरफ समाज में पसंद किया जाता था उसका प्रतिशत कम होता नजर आ रहा है। प्रस्तुत धारावाहिक में प्यार को प्यार से जीतने की परंपरा न दिखाते हुए इसमें आधुनिकता का समावेश करते हुए पैसे, जीद और चालाकियों से प्यार को पाने की बेहतरीन तरकीबें दिखाई गई हैं। ये तरकीबें समाज में नकारात्मकता को बढ़ावा देते हुए सामाजिक संरचना एवं संबंधों को प्रभावित करती नजर आएगी।

प्रश्न.6. क्या बेहद सीरियल में माया के द्वारा अर्जून को सबसे पहले जन्मदिन की बधाई देने और जल्दी घर पहुंचने के लिए एंबुलेस का प्रयोग उचित लगता है? प्रस्तुत धारावाहिक में समाज के द्वारा प्रचलित नियम और पंरपराओं को आधुनिकता में पीरोकर प्रस्तुत करने के साथ-साथ नियम विरुद्ध भी प्रस्तुत किया गया है। माया के द्वारा अर्जून को सबसे पहले जन्मदिन की बधाई देने के लिए एंबुलेंस का उपयोग किया जाना नियमतः तो गलत है परंतु 36.34 प्रतिशत प्रतिभागी हां में मत देकर इसे सही साबित करते नजर आते हैं। तथ्यों से प्रतित होता है कि वर्तमान आधुनिक युग में प्यार करने वाले किसी भी हद को बेहद पसंद करते नजर आते हैं। माया के द्वारा नियम विरुद्ध एंबुलेंस का उपयोग किया जाना भी उन्हें पसंद है। वहीं 49.33 प्रतिशत प्रतिभागी इस नियम विरुद्ध तरीके को सिरे से नकारते हैं। चिंता का विषय यह है कि एक सभ्य समाज में जहां इस नियम विरुद्ध कार्य को सभी को नकारना चाहिए परंतु ऐसा न होकर एक बड़ा तबका इस नियम विरुद्ध तरीके को पसंद करता नजर आ रहा है। वहीं केवल 14.33 प्रतिशत प्रतिभागी ही इसे नियम विरुद्ध तरीका मानते हैं। किसी भी समाज के लिए यह आंकड़े चिंता का विषय हो सकता है। आंकड़े दर्शातें है कि समाज में जीवन-यापन के तौर-तरीके के साथ-साथ प्यार और दोस्ती निभाने के भी बदल रहे हैं।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रश्न.7. क्या माया की मां (जहांवी) को बार-बार शराब पीते हुए दिखाना हमारे समाजए संस्कृति, रीति-रीवाज एवं महिला सम्मान के लिए उचित है? प्रस्तुत धारावाहिक में परंपरा, संस्कृति और रीति-रिवाजों के स्थापित मानकों को तोड़ते हुए दिखाया गया है। जिसका उत्तरदाताओं ने 78.33 प्रतिशत मत देकर विरोध किया है वहीं 21.67 मतों के साथ आधुनिक समाज इसे पसंद कर रहा है। विश्लेषण यह दर्शाता है कि आधुनिक होने के बाद भी आज समाज में महिलाओं को वास्तविक आधुनिकता का हक नहीं मिल रहा है। महिलाओं के मामले में आज भी हम पीछे खड़े नजर आते हैं।

प्रश्न.8. क्या बेहद सिरियल के डायलॉग (संवाद) हमारी सांस्कृतिक मान्यताओं को प्रभावित कर रहे है? हां के अंतर्गत प्राप्त 61.67 प्रतिशत आंकड़े यह दर्शाते हैं कि यह धारावाहिक हमारी सांस्कृतिक मान्यताओं को प्रभावित कर रहा है। जबकि 38.33 प्रतिशत आंकड़े नहीं में प्राप्त होते हैं। सिनेमा समाज का आइना होता है लेकिन पीछले एक दशक से धारावाहिक ने अपने प्रस्तुतिकरण में सामाजिक दायित्व का निर्वहन नहीं के बराबर कर दिया है। बाजार के दबाव में धारावाहिकों की भाषा बदलती नजर आ रही है। अब इन धारावाहिकों में समाज के रीति-रिवाजों का प्रस्तुतिकरण न करके उसे आधुनिक बनाने की कोशिशों में नए-नए प्रयोग किए जा रहे हैं। इस तरह के प्रयोग समाज और संस्कृति के लिए घातक है।

प्रश्न.9. क्या बेहद और इसके जैसे अन्य कहानी/कथानक आधारित वाले सीरियलों पर रोक लगाने/बंद करने की आवश्यकता है? एक तरफ जहां बेहद धारावाहिक को दर्शकों द्वारा बेहतर टीआरपी मिल रही है वहीं दूसरी तरफ लोग इसके प्रस्तुतिकरण को लेकर चिंतित भी हैं। दर्शकों का मत है कि इस धारावाहिक प्रस्तुतिकरण के विभिन्न स्तरों में बदलाव किया जाना चाहिए। प्रतिभागियों से प्राप्त 33.33 प्रतिशत मत ही इसे बंद करने के पक्ष में हैं। जबकि 66.67 प्रतिशत मत इसे जारी रखने के पक्ष में है। विश्लेषण यह दर्शाता है कि बेहद जैसे कथानक पर आधारित धारावाहिक बंद करने की अपेक्षा इनके प्रस्तुतिकरण एवं कहानी में बदलाव की आवश्यकता है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रश्न.10. माया के प्रति उसके पिता (अश्विन मलहोत्रा) का व्यवहार समाज में पिता-पुत्री के पवित्र संबंधों को केवल नकारात्मक रूप में प्रस्तुत करता है? धारावाहिक की मुख्य पात्र माया मलहोत्रा की जिंदगी की कहानी को बड़ी ही संजीदगी और भावनात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। जिसे दर्शकों द्वारा 65.67 प्रतिशत मतों के साथ सहमति दी है। प्रतिभागियों ने पिता-पुत्री के रिश्ते को गंभीरता से लेते हुए धारावाहिक में प्रस्तुत किए जा रहे संबंधों को अस्वीकार कर दिया है। पिता के द्वारा पुत्री पर अत्याचार करने को हमारा समाज स्वीकृति प्रदान नहीं करता है। जबकि 34.33 प्रतिशत आंकड़े धारावाहिक के प्रस्तुतिकरण को स्वीकृति प्रदान करते हैं।

प्रश्न. 11. बेहद सीरियल पर अपने विचार दें-

प्रश्नावली के अंतिम प्रश्न के रूप में प्रतिभागियों से बेहद धारावाहिक के प्रस्तुतिकरण पर उनके विचार मांगे गए थे। इस खुले प्रश्न पर प्रतिभागियों ने विभिन्न विचार दिए जिनका विवरण इस प्रकार है-

बेहद धारावाहिक मुझे बहुत पसंद है। इसलिए मैं इसे रोज देखता हूं। यह धारावाहिक कुछ नया दिखा रहा है। इसलिए हम इसे नियम से देखते हैं। इस धारावाहिक में सस्पेंस और रोमांस को बड़े ही नाटकीय रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है इसलिए यह मुझे पसंद है। मुझे अर्जून पसंद है इसलिए मैं इसे देखती हूं। इस धारावाहिक का प्रस्तुतिकरण फिल्मों की तरह हो रहा है। इसलिए मुझे पसंद है। यह धारावाहिक समाज में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। ऐसे धारावाहिक जब-जब दिखाए जाते हैं तब-तब समाज में फैशन और जीवन जीने की तौर-तरीकों में बदलाव देखने को मिलते हैं। इस धारावाहिक का प्रस्तुतीकरण ठीक नहीं है। इसे तत्काल बंद कर देना चाहिए। मुझे माया का रोल बहुत पसंद हैं इसलिए मैं इस धारावाहिक को जरूर देखता हूं।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

निष्कर्षः

प्राप्त तथ्यों के अनुसार निम्नलिखित निष्कर्ष इस प्रकार हैं-

- 57 प्रतिशत प्राप्त आंकड़े बेहद के प्रस्तुतिकरण को समाज के लिए सकारात्मक और प्रभावी मानते हैं।
- 61 प्रतिशत प्रतिभागी यह मानते हैं कि बेहद धारावाहिक के प्रसारण से भारतीय समाज एवं संस्कृति की मान्यताएं प्रभावित हो रही है।
- 51 प्रतिशत हां के आंकड़े धारावाहिकों के प्रस्तुतीकरण को गंभीरता से लेते हुए उसपर विचार मंथन कर अपनी राय बनाते हैं।
- सांझ का सादगी से प्यार करने के तरीके को 61 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा पसंद किया गया।
- धारावाहिक में परंपरा, संस्कृति और रीति-रिवाजों के स्थापित मानकों को तोड़ते हुए दिखाया गया है। जिसका उत्तरदाताओं ने 78.33 प्रतिशत मत देकर विरोध किया है।
- 61.67 प्रतिशत आंकड़े यह दर्शाते हैं कि यह धारावाहिक हमारी सांस्कृतिक मान्यताओं को प्रभावित कर रहा है।
- 66.67 प्रतिशत बेहद जैसे कथानक पर आधारित धारावाहिक बंद करने की अपेक्षा इनके प्रस्तुतिकरण एवं कहानी में बदलाव की आवश्यकता पर जोर देते है।
- 65.67 प्रतिशत मतों के प्रतिभागियों ने पिता-पुत्री के रिश्ते को गंभीरता से लेते हुए धारावाहिक में प्रस्तुत किए जा रहे संबंधों को अस्वीकार कर दिया है। पिता के द्वारा पुत्री पर अत्याचार करने को हमारा समाज स्वीकृति प्रदान नहीं करता है।
- यह धारावाहिक, धारावाहिकों के प्रस्तुतीकरण के नए मानकों को स्थापित करने में सफल प्रतीत होता है।
- इस धारावाहिक से दर्शकों को धारावाहिकों का बेहतर प्रस्तुतीकरण देखने को मिला।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सुझावः

शोध अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा रहे हैं-

- बेहद धारावाहिक का प्रस्तुतिरकरण समाज में नकारात्कता को बढ़ावा दिया है। अतः इस तरह की कहानी/पटकथा वाले धारावाहिकों का प्रस्तुतिकरण बंद होना चाहिए।
- इस धारावाहिक के प्रस्तुतिकरण से खासकर युवाओं में प्यार को पाने की लालसाएं जिद में बदली है। इस तरह के प्रस्तुतिकरण बंद होने चाहिए।
- इस तरह के धारावाहिकों का प्रसारण प्राईम-टाईम में नहीं होना चाहिए।
- मदिरापान आज भी हमारे समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है। इसलिए इस तरह के दृश्यों का प्रसारण उचित नहीं है। खासकर महिलाओं को मदिरापान करते दिखाना हमारे परंपरा और संस्कृति को प्रभावित करता है। इस तरह के दृश्यों को प्रसारण में शामिल नहीं करना चाहिए।
- धारावाहिक व्यक्ति और समाज को धीरे-धीरे प्रभावित करते हैं। क्योंकि इनका प्रस्तुतिकरण सालों-साल होता रहता है और दर्शक इन्हें अपने जीवन का हिस्सा बना लेता है। इसलिए इनका प्रभाव अन्य कार्यक्रमों की अपेक्षा अधीक होता है।
- सरकार को सख्त नियम बनाने की आवश्यकता है। केवल शिकायत प्रकोष्ठ बनाकर अपने दायित्वों से मुक्त नहीं हुआ जा सकता है।

सहायक संदर्भ सूचीः

Dash Dhanalaxmi, Satapathy Mahendra K., People Who Make a Change (Men and Women in Environmental Movements.

जैन, नेमिचंद्र, (1993). दृश्य-अदृश्य. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन 978-81-705-5268-0.

जोशी, मनोहर श्याम, (2007). आज का समाज. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन 81-267-1247-3.

सिंह, डॉ. देवव्रत, (2007). भारतीय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया. दिल्लीः प्रभात प्रकाशन. आईएसबीएन- 81-7315-642-5.

चतुर्वेदी, जगदीश्वर, (2004). टेलीविजन संस्कृति और राजनीति. नई दिल्लीः अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि. आईएसबीएन- 81-7975-062-0.

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अमर, डॉ. अमरनाथ, (2008). टेलीविजन साहित्य और सामाजिक चेतना. दिल्लीः आलेख प्रकाशन 978-81-8187-155-3.

विलियम्स, रेमंड, अनुवादक- राय, दीपू, (2010). टेलीविजन प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक रूप. दिल्लीः ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड. आईएसबीएन- 978-81-7917-130-1.

गोल्डिंग, पीटर, अनुवादक- सिंह, सुधा, (2010). जनमाध्यम. दिल्लीः ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड. आईएसबीएन- 978-81-7917-133-2.

भानावत, डॉ. संजीव, (2010). भारत में संचार माध्यम. जयपुर राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी. आईएसबीएन- 978-81-7131-766-4.

कठेरिया, डॉ. धरवेश, सिंह, डॉ. महावीर, (2015). दूरदर्शन माध्यम और तकनीक. दिल्लीः नेहा प्रकाशन. आईएसबीएन- 978-81-88080-62-5.

चतुर्वेदी, जगदीश्वर, (2004). टेलीविजन संस्कृति और राजनीति. नई दिल्लीः अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि. आईएसबीएन द 81-7975-062-0.

सिंह, डॉ. देवव्रत, (2007). भारतीय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया. दिल्लीः प्रभात प्रकाशन. आईएसबीएन- 81-7315-642-5.

कश्यप, डॉ. श्याम, कुमार, मुकेश, (2008). टेलीविजन की कहानी. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. आईएसबीएन- 978-81-267-1459-9.

जोशी, मनोहर श्याम, (2000). पटकथा लेखन एक परिचय, नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन 978-81-267-1500-8.

रैणा, गौरीशंकर, (2006). संचारमाध्यम लेखन. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन 81-8143-590-7.

सिंह, महिपाल, मिश्र, देवेन्द्र, विश्व बाजार में हिंदी. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन।

भादू, राजाराम, (2003). धर्मसत्ता और प्रतिरोध की संस्कृति, नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन 81-267-0629-5.

कठेरिया, डॉ. धरवेश, सिंह, डॉ. महावीर. (2014). टेलीविजन लाइव. दिल्ली नवचेतन प्रकाशन. आईएसबीएन- 978-81-89006-50-1.

भसीन, अनीस, (2013). मीडिया विश्वकोश. नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन 978-93-831-1020-9.

रिपोर्टः

https://assets.kpmg/content/dam/kpmg/in/pdf/2017/04/FICCI-Frames-2017.pdf
https://aibmda.in/FICCI-KPMG-M&E-Report-2016.pdf

वेबसाइट संदर्भः

https://www.youtube.com/watch?v=Z8GruMn9vCI
https://www.youtube.com/watch?v=VRWvY7CSWYo
https://www.youtube.com/watch?v=JYkp_BX8ShA
https://www.youtube.com/watch?v=RVCsW33gDjo
https://www.youtube.com/watch?v=phNmQ8C2WkE
https://www.youtube.com/watch?v=6kDgcRlGrBY

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

https://www.youtube.com/watch?v=jr8zEw9Uinw
https://www.youtube.com/watch?v=nRsj0Eceq6s
https://www.youtube.com/watch?v=2y_KmmvZuMA
https://www.youtube.com/watch?v=Jgzz9OBJcmc
https://www.youtube.com/watch?v=UFRnzEC3hwI
https://www.youtube.com/watch?v=tauvJ4ttcI4

फोटो संदर्भः

https://www.google.com/search?q=beyhadh+photos&rlz=1C1CHBF_enIN815IN815&tbm=isch&source=iu&ictx=1&fir=5HL0YGj2we4CM%252CcQePO29USvQTM%252C_&vet=1&usg=AI4_kTVxMRKMeE3FJyygwm89XBj_ConQ&sa=X&ved=2ahUKEwil0My18NvsAhWz7XMBHdyjDkkQ9QF6BAgCEE8&biw=1366&bih=568#imgrc=5HL0YGj2we-4CM

https://www.google.com/search?q=beyhadh+photos&rlz=1C1CHBF_enIN815IN815&tbm=isch&source=iu&ictx=1&fir=5HL0YGj2we-4CM%252CcQePO29USvQTM%252C_&vet=1&usg=AI4_kTVxMRKMeE3FJyygwm89-XBj_ConQ&sa=X&ved=2ahUKEwil0My18NvsAhWz7XMBHdyjDkkQ9QF6BAgCEE8&biw=1366&bih=568#imgrc=Jz4ZsutkdJygdM

https://www.google.com/search?q=beyhadh+photos&rlz=1C1CHBF_enIN815IN815&tbm=isch&source=iu&ictx=1&fir=5HL0YGj2we-4CM%252CcQePO29USvQTM%252C_&vet=1&usg=AI4_kTVxMRKMeE3FJyygwm89-XBj_ConQ&sa=X&ved=2ahUKEwil0My18NvsAhWz7XMBHdyjDkkQ9QF6BAgCEE8&biw=1366&bih=568#imgrc=KtcBz9woyBE-IM

https://www.google.com/search?q=beyhadh+photos&rlz=1C1CHBF_enIN815IN815&tbm=isch&source=iu&ictx=1&fir=5HL0YGj2we-4CM%252CcQePO29USvQTM%252C_&vet=1&usg=AI4_kTVxMRKMeE3FJyygwm89-XBj_ConQ&sa=X&ved=2ahUKEwil0My18NvsAhWz7XMBHdyjDkkQ9QF6BAgCEE8&biw=1366&bih=568#imgrc=R_uFo3vNjNI0RM

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies